ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 23 कुल पृष्ठ-8 **25 फरवरी से 3 मार्च, 2021** दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 मा. शु.-14

मुजफ्फरनगर में 14 व 15 फरवरी, 2021 को राष्ट्रभृत यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार समारोह पूर्वक सम्पन्न

संस्कार और संस्कृति मानव निर्माण के मुख्य सोपान हैं

– स्वामी आर्यवेश

महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से शहीदे आजम भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह आर्य समाज से जुड़े थे

– किरणजीत सिंह सिन्धु

महर्षि दयानन्द जी के बताये हुए मार्ग का अनुसरण करें

– डॉ. सत्यपाल सिंह

संस्कारों के अभाव में युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित हो रही है

– आचार्य गुरुदत्त आर्य

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जनपद मुजफ्फरनगर के ख्यातिलब्ध वैदिक प्रचारक आचार्य गुरुदत्त आर्य जी की प्रेरणा से दो दिवसीय राष्ट्रभृत यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार समारोह 14 व 15 फरवरी, 2021 को आयोजित किया गया। शहर के सरकुलर रोड स्थित संतोष विहार में वैदिक संस्कार चेतना केन्द्र पर समारोह का शुभारम्भ वेद मन्त्रोच्चार के साथ यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पद को आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद (बिजनौर) की अधिष्ठात्री आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेद भारती तथा पुरोहित पद को चरथावल गुरुकुल के संचालक आचार्य दयादेव जी ने सुशोभित किया। वैदिक विधि एवं विधान से आर्य संन्यासियों के पावन सान्निध्य में आचार्यों ने यजमान अथर्व जांगिड़, हर्षवर्धन एवं लक्ष्यदेव का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराया।

संस्कार समारोह में विश्व की समस्त आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य निर्माण के लिए संस्कार विधि लिखी थी जिसमें सोलह संस्कारों का विधान करके उन्होंने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त विभिन्न संस्कार करने आवश्यक बताये हैं। स्वामी जी ने कहा कि संस्कारों से निर्मित युवा ही किसी समाज व राष्ट्र का आधार होते हैं और मनुष्य जीवन के उद्देश्य पुरुषार्थ चतुष्टय की ओर मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्होंने कहा कि आज संयोग की बात है कि एक तरफ तीन नवयुवकों का हम सभी लोग समारोह पूर्वक यज्ञोपवीत संस्कार कर रहे हैं और दूसरी तरफ 14 फरवरी का दिन वैलेंटाइन दिवस के रूप में युवा पीढ़ी मना

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

शिक्षा का वर्तमान सन्दर्भ और स्वामी दयानन्द सरस्वती

– एच. के. शर्मा, प्राचार्य

महर्षि दयानन्द का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब विदेशी हुकूमत भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पद–दलित कर भारतीयों के मन में हीन–भावना के तन्तु पनपा रही थी। काले और गोरे का जाति विभाजन कुचक्र चलाकर वे ऐसे भारतीय पैदा करने के प्रयत्न कर रहे थे जो शिक्षित होकर क्लर्की का काम कर सकें और रंग से भारतीय और मन से अंग्रेजियत के हामी हों। ऐसे समय में जब भारतीय शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति पर काले बादल मंडरा रहे थे, तो भारतीय क्षितिज पर प्राची के अंक से ऐसा देदीप्यमान सूर्य स्वामी जी के रूप में उदित हुआ जिसने शैक्षिक, सामाजिक धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में फैले प्रदूषण कलांश को धोकर अपने उस प्रकाश से निर्मल बना दिया जो शाश्वत सत्य है। शैक्षिक एवं सामाजिक धरातल पर उन्होंने जो शंखनाद किया वह आर्यावर्त का श्रेष्ठ पुनर्जागरण कहा जा सकता है।

एक प्रकृतिवादी पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री जिसका नाम 'रुसो' था उसने शिक्षा जगत को नारा दिया था ''बालक स्वतन्त्र उत्पन्न होता है किन्तु धीरे–धीरे उसे बन्धन में बांध दिया जाता है अतः मैं कहता हूँ 'प्रकृति की ओर लौट चलो'।'' स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र की आत्मा को पहचाना, आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया, और छद्म वेशी पाखण्डों के खण्ड–खण्ड कर इस देश के आर्यजनों को नव चेतना से अनुप्राणित कर दिया। उन्होंने कहा जो सत्य है, जो तर्क पर खरा उतरता है वह सदैव स्वीकार्य होना चाहिए और जो इससे भिन्न है वह त्याज्य होना चाहिए। उन्होंने देश को बहरुपियों से बचाकर शिक्षा और समाज का भारतीयकरण सही अर्थ में कर डाला। 'मातृमान, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेद' की पुनीत भूमि पर रचे बसे गुरुकुल पद्धति के शिक्षा आश्रमों को चिन्हित कर उन्होंने नारा दिया वेदों की ओर लौट चलो।

वर्तमान समय की आवश्यकता और दृष्टिकोण के विस्तार से स्वामी दयानन्द अपरिचित नहीं थे। वे जानते थे–वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इस युग में संकुचित दृष्टिकोण, रुढ़िवादित और अन्धविश्वासों के मायाजालों में फंसा रहना अनर्थकारी है। इसलिए उन्होंने लोगों को वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टि दी। भूत प्रेत गण्डे ताबीज, ओझाओं के झाड़–फूंक आदि के कुचक्रों में न जाने कितने स्त्री पुरुष दिगभ्रमित हो रहे थे। कर्मकाण्डी और पाखण्डी पोपों के चंगुल में बहुत लोग फंसे थे यहां तक कि नर बलि तक को मान्य मान लिया गया था। अभी कुछ दिन पूर्व गणेश जी की मूर्ति को दूध पिलाने की घटना ज्यादा पुरानी नहीं जब न केवल अशिक्षित नर–नारियों ने अपितु अनेक शिक्षितजनों ने भी इसे सत्य मानकर दिन छिपते छिपते मूर्ति को दूध पिलाया था। पितृ श्राद्धों और नमः तुम्बाय के खोखलेपन आज भी जन–मन को बहका रहे हैं। महर्षि ने इन सामाजिक विसंगतियों को दूर कर तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि देकर लोगों को ठग और स्वार्थी लोगों से बचाने का कवच देकर सामाजिक शिक्षा में एक अध्याय जोड़ा। पाखण्ड खण्डिनी ध्वज फहराकर लोगों को गुमराह न होने की शिक्षा दी। समाज को सुशिक्षित और सुसंस्कारित करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। सामाजिक परिवर्तन की 'शिक्षा' संवाहिका कही जाती है। और तर्क के डण्डे से विष कुंभों को महर्षि दयानन्द ने चूर–चूर कर समाजोनति का शैक्षिक मार्ग प्रशस्त किया।

किं बहुना, महर्षि जानते थे कि उपदेशों का प्रभाव स्थायी चिकित्सा नहीं है। पाश्चात्य विद्वान और शिक्षाविद सुकरात की यह विशेषता थी कि वह लोगों को प्रश्नोत्तर शैली से अपनी बात समझता था। आजकल बी. एड. आदि में विद्यार्थियों को भाषण पद्धति के स्थान पर प्रभावी प्रश्नोत्तर शैली में पढ़ाने का आग्रह है। एक चैतन्य शिक्षक के नाते स्वामी जी ने जो कुछ जन–जागरण की शिक्षा दी वह प्रश्नोत्तर शैली में ही है। उनके शिक्षकीय आदान प्रदान की यह शैली प्रमाण सहित होने के कारण बड़ी प्रभावी थी।

आजकल साक्षरता पर बड़ा जोर दिया जा रहा है, सभी को शिक्षित करने का लक्ष्य है। इस दिशा में लोक जुम्बिश, शिक्षाकर्मी योजना, सरस्वती योजना और शिक्षा के सार्वजनीकरण की योजना इस हेतु चलाई जा रही है। इस पर करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं। एक सौ तिरसठ वर्ष पहिले इसका एक व्यावहारिक हल बताया जो सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास से अविकल उद्धृत है –

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

यदि न आते देव दयानंद

–विमलेश बंसल 'आर्या'

पंच यज्ञ घर–घर न होता, दूर विकृति न होती।
यदि न आते देव दयानंद, आर्य धरा रहती रोती।।
घटा टोप कालिमा अंधेरा, कोहरा बढ़ा जा रहा था।
विदेशियों की कुटिल धुंध से, सूरज ढका जा रहा था।
सत्य–अर्थ–प्रकाश न होता, सब दुनिया तम में सोती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....
पीर मुहम्मद पोपों सारे, सर्प कुण्डली बने पिटारे।
चूहे और छछूंदर दोनों, कुतर रहे थे वस्त्र हमारे।
ब्रह्मा का स्थान न मिलता, बुरके में नारी होती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....
आओ हम सब आर्य विमल बन, ऋषि दयानंद को शीश झुकाएँ।
उनके पदचिह्नों पर चलकर, जग वैदिक उद्यान खिलायें।
वेद आर्य स्वाभिमान न जगता वैदिक संस्कृति क्या होती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....

पताः 329 द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली–110065
चल दूरभाष–8130586002
E-mail : vimleshbansalarya69@gmail.com

''संतानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।'' उन्होंने आगे लिखा।

''राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि, पांचवें–आठवें वर्ष के आगे अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे, वह दण्डनीय हो।''

आजकल महिला शिक्षा की बात बहुत उभर कर आ रही है। बहुत से क्षेत्र आज भी महिला–शिक्षा में काफी पिछड़े हुए हैं। लड़कियों को 'चूल्हा–चक्की कर्म' का एक अंग अभी भी माना जाता है कम आयु में बालिकाओं का विवाह या लड़कियों का विद्यालय में नामांकन अभाव आज की ज्वलन्त समस्याएँ हैं। देश में नारी शिक्षा की दशा शोचनीय है। स्त्रियाँ लक्ष्मी से दासी की परिधि में सिमट रही हैं। बलात्कार, हिंसा, आत्महत्या जैसे विभत्स दृश्य नारी–अशिक्षा के मुखर पृष्ठ हैं, इन सबसे निजात पाने के लिए स्वामी जी ने नारी को सम्मानीय पद पर लाकर प्रतिष्ठित कर दिया। लिंग भेद से अन्तर न करना, वेदाध्ययन की अधिकारिणी होना, आदि धरातलों पर उन्होंने नारियों को उनका अधिकार दिलाने में कोई कोर कसर नहीं रखी। 'रूपकंवर' जैसे सती प्रथा के दुराचरण को समाप्त करके उन्होंने नारियों की प्राण रक्षा का पुनीत कार्य किया। वे मासूम बच्चियाँ। वे निरी विधवाएँ।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात है कि दयानन्द सरस्वती ने लड़कियों की शिक्षा की बात कह कर शैक्षिक समाज में एक क्रान्ति ला दी। उन्होंने वेदों का उदाहरण देते हुए कहा –

- लड़कियों को भी लड़कों के समान पढ़ाना चाहिए।

- प्रत्येक कन्या का अपने भाई के समान उपनयन संस्कार होना चाहिए।

- लड़कियों का विवाह न तो बाल्यावस्था में हो, न उनकी इच्छा के विरुद्ध।

- पुत्री को पुत्र के समान और विधवा को विधुर के समान अधिकार है।

आज के सन्दर्भ में जो आर्य कन्या विद्यालय/महाविद्यालय इस दिशा में शिक्षा का प्रसार करने में जुटे हैं, सचमुच वे शिक्षा जगत की महत्त्वपूर्ण और सामाजिक सेवा कर रहे हैं।

आजकल विद्यालयों/महाविद्यालयों में सह शिक्षा एक प्रचलित शिक्षा है सरकारी शिक्षालयों में संसाधनों के अभाव में कदाचित् इसे स्वीकारा गया है। किन्तु आये दिन प्रधानाध्यापकों/आचार्यों के सम्मुख (सह शिक्षागत दोषों के परिणाम स्वरूप) छात्राओं की प्रायः शिकवा शिकायतें, अशोभनीय व्यवहारगत हरकतों की दास्तानें सुनने देखने में आती हैं। वयस्क किशोर–किशोरियों के मध्य विषम लिंगियों के प्रति आकर्षण के यह दृश्य मनोवैज्ञानिक सत्य हैं। इसे ध्यान में रखकर स्वामी जी ने कहा था – लड़के और लड़कियों के अलग–अलग विद्यालय हों और इनमें एक दूसरे का आवागमन वर्जित हो। वर्तमान समय में समानता का मौलिक अधिकार दिया गया है। शिक्षा जगत में शैक्षिक अवसरों की समानता 'Equal opportunites of Education' बहुचर्चित पाठ्य प्रकरण है और इसके विभिन्न अर्थ दिये जा रहे हैं। स्वामी जी की पारखी दृष्टि से यह ओझल नहीं हो सका और उन्होंने 'समान शैक्षिक अवसर' प्रकरण पर अपना मन्तव्य इस प्रकार व्यक्त किया है –

यदि वेदों का आश्रय लिया जाये और तर्क के आधार पर सोचा जाये तो मानव मानव में कोई भेद मालूम नहीं होता। वेदों में कहा गया है कि ''एकैव मानुष जाति।'' स्वामी जी ने समस्त मानव जाति को एक मानते हुए उसके आचरण को प्रधानता दी है। उन्होंने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप सभी को शिक्षा प्रदान करने की बात कही। अवर्ण और सवर्ण के जन्मगत भेद गर्तों को जातिगत, धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने की दृष्टिमति देते हुए कहा –

''जो दुष्ट कर्मकारी द्विज को श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्मकारी शूद्र को नीचा माने तो इससे परे पक्षपात, अन्याय, अधर्म दूसरा अधिक क्या होगा।''

इस उद्धरण से शिक्षा के प्रति उनकी सोच और आचरण आधारित शिक्षा के लिए सभी को द्वार उन्मुक्ति का सामयिक परिचय मिलता है।

शिक्षा, यद्यपि एक सतत प्रवाहिता निर्झरणी है तथापि आज के संदर्भ में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को कभी नहीं भुला सकते। गंगा तो बहेगी, किन्तु महर्षि के हिमालयी उद्गम स्थलों की अनदेखी करना हमारी भूल होगी। महर्षि दयानन्द जी उदात्त भावनाओं और नैसर्गिक बोध के तत्त्वेत्ता थे। देश के अग्रणी चिन्तक, समाज सुधारक, क्रान्ति के अग्रदूत, शैक्षिक दृष्टिदाता, संस्कृति के शाश्वत कोष मातृभाषा, मातृ संस्कृति, मातृभूमि और मातृशक्ति के प्रति उनके मन में अगाध लगाव था। उनका शैक्षिक चिन्तन इसी लगाव से प्रभावित था। 'भारत भारतीयों के लिए है' और इसकी शिक्षा नीति रीति भी भारतीयता से परे नहीं हो सकती। बापू ने 'हरिजन' के एक अंक में सन् १९२२ में लिखा था दयानन्द जी की आत्मा आज भी हमारे बीच काम कर रही है। वे आज उस समय से भी अधिक प्रभावशाली हैं जबकि वे हमारे बीच सदेह थे।'' जिस देव दिव्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने शिक्षा के माध्यम से जाति संप्रदाय विहीन समाज की संरचना का, नारी के सम्मान का, निरक्षरता निवारण का और सुसंस्कारिता की शिक्षा का जो आलोक भारतीय खितिज से हमें परोसा है उस देदीप्यमान सूर्य को शत–शत नमन।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

विश्व की समस्त आर्य समाजों से आवश्यक अपील

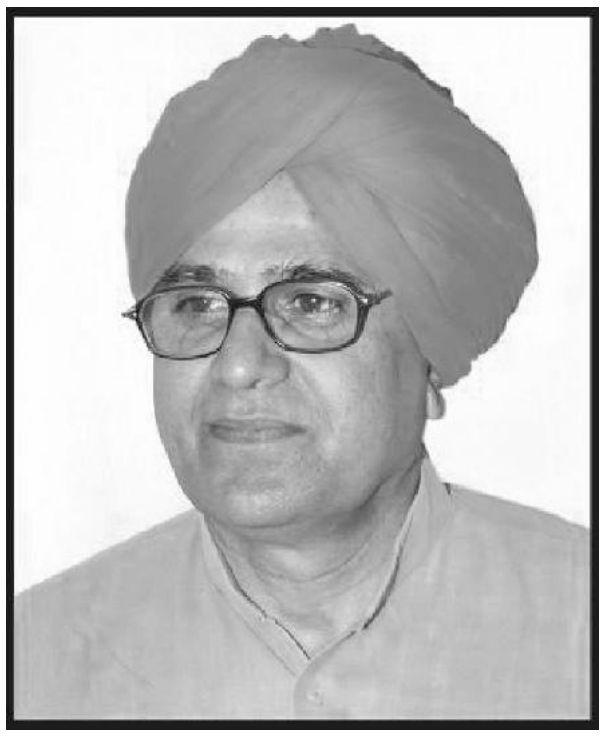

मान्यवर,

सादर नमस्ते!

आशा है आप ईशानुकम्पा से स्वस्थ एवं सकुशल होंगे। आपसे इस पत्र के माध्यम से निवेदन है कि विश्वव्यापी कोरोना महामारी के इस दौर में अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते हुए तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं केन्द्र तथा प्रान्तों की सरकारों द्वारा घोषित व निर्धारित सुरक्षा उपायों एवं आवश्यक नियमों का पालन करते हुए अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन भी निष्ठा पूर्वक करें। वर्तमान में सरकार के निर्देशानुसार देश में लगभग समस्त गतिविधियाँ कोरोना संक्रमण से पूर्व की भांति प्रारम्भ हो चुकी हैं, इस स्थिति में आर्य समाजों के प्रचार कार्य को प्रारम्भ करने की भी महती आवश्यकता है। आर्य समाजों के सत्संग, वेद कथाएं, वार्षिकोत्सव तथा अन्य गतिविधियाँ पूर्व से भी अच्छे स्तर पर पूर्ण उत्साह के साथ प्रारम्भ कर देने चाहिए। जिन स्थानों पर अभी कोरोना संक्रमण का खतरा है वहाँ आर्य समाज की गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए वर्तमान परिस्थितियों में निम्नलिखित बिन्दुओं में वर्णित कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने की कोशिश करें।

1. सभी आर्य समाजें अपने साप्ताहिक सत्संग ऑनलाईन (जूम पर) करना शुरू करें। इसके लिए किसी भजनोपदेशक को भजन के लिए व किसी विद्वान उपदेशक को व्याख्यान के लिए आमंत्रित करके उन्हें अपने स्थान से ही कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए कहें। कार्यक्रम के साथ आर्य समाज के सभी सदस्यों व आर्य समाज से इतर गणमान्य लोगों को भी अवश्य जोड़ें। इसके लिए जूम लिंक उन तक पहुंचाना आवश्यक है। सत्संग का विधिवत संयोजन आर्य समाज के मंत्री जी अथवा कोई अधिकारी अथवा पुरोहित जी करें। प्रातः यज्ञ व उसके पश्चात् सत्संग में कम से कम लोग इकट्ठे होवें तथा शारीरिक दूरी बनाके रखें, मुँह पर मास्क अवश्य लगायें तथा हाथों को सेनेटाईज करें, इससे घर बैठे सभी सदस्यों को सत्संग का लाभ मिलेगा तथा वे सुरक्षित भी रहेंगे।

2. सभी आर्य समाजों में दैनिक स्वाध्याय का ऑन लाईन कार्यक्रम प्रारम्भ करें। स्वाध्याय के कार्यक्रम से जूम लिंक के माध्यम से सभी सदस्यों व अन्य गणमान्य महानुभावों को जोड़ें। स्वाध्याय किसी एक ग्रन्थ का प्रारम्भ किया जाये। आर्य समाजों के पुरोहितगण इस कार्य को कुशलता के साथ कर सकते हैं।

3. वैदिक संस्कृति के मुख्य तीन स्तम्भ यज्ञ, योग व आयुर्वेद वर्तमान समय में कोरोना संक्रमण से राहत दिलाने में उपयोगी उपाय हैं। अतः इन विषयों पर विशेष व्याख्यान करवाये जायें।

4. साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त वार्षिकोत्सव व विशेष संगोष्ठी भी ऑनलाईन, वर्चुअल बेवीनार के माध्यम से आयोजित कर लेवें।

5. वार्षिकोत्सव, विशेष संगोष्ठी या सत्संग में प्रयास करें कि आमन्त्रित विद्वान उपदेशक वैदिक सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में निम्न विषयों पर अपने प्रवचन अवश्य देवें।

(क) मानव जीवन की सार्थकता, (ख) पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के द्वारा मानव के उद्देश्य की पूर्ति, (ग) वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है, (घ) त्रैतवाद (ईश्वर, जीव, प्रकृति), (ङ) ईश्वरोपासना की सरल विधि संन्ध्या, (च) पंच महायज्ञों का महत्त्व, (छ) सोलह संस्कार, (ज) अष्टांग योग, (झ) कर्मफल, (ञ) पुनर्जन्म, (ट) मनुर्भव दैव्यंजनम्, (ठ) शरीरमाध्यम् खलुधर्म साधनम्, (ड) शाकाहार का महत्त्व, (ढ) नशाखोरी – समाज के पतन का मुख्य कारण, (ण) जातिप्रथा एक अभिशाप, (त) योगेश्वर श्रीकृष्ण का वैदिक स्वरूप, (थ) बाल्मीकि रामायण की समीक्षा, (द) वैदिक गीता एक दृष्टि, (ध) धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्ड का पर्दाफाश आदि–आदि।

6. आर्य समाज की प्रत्येक गतिविधि व कार्यक्रम को स्थानीय समाचार पत्रों, टी.वी. चैनलों व सोशल मीडिया (वाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर) के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करना ताकि अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिले।

7. नये सदस्य बनाकर आर्य समाजों को सशक्त बनाना। सदस्य बनाते समय नई पीढ़ी के युवक व युवतियों को प्राथमिकता देना।

8. आर्य समाज को उपयोगी आर्य समाज के रूप में सामान्य जनता के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए विविध सेवा व राहत कार्य निरन्तर चालू रखना तथा सभी जरूरतमन्द लोगों की सहायता कर उन्हें आर्य समाज से जोड़ना।

9. सामयिक समस्याओं पर सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए समाधान हेतु यथोचित प्रयास करना।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों तथा प्रचार कार्य को हम जन–जन तक पहुँचाकर ऋषि के मिशन को साकार कर सकेंगे।

The Heritage of Swami Dayanand Saraswati

- B. R. Sharma Vibhakar

Swami Dayanand Saraswati was born in Tankara of Maurvi State in Saurashtra province. On Falgun Badi Dasmi every year his birthday is celebrated with great zeal. On falgun badi chaudas or the day of shiva Ratri is regarded as a day of 'Rishi Bodhotsva'. As a teenager his soul got illumined. An idea struck in his mind that there must be some other Shiva except this one made of stone, who utterly failed to defend himself from the mischief of a mouse to pollute the pindi of Shiva and stale the offerings. Look at the Vishtha and urine of the mouse making it dirty!

Actually, there was a custom (still rampant) in those days that everyone might be on fast and awoke throughout the night known as the Shiva Ratri. Mool Shankar (Swami Dayanand's earlier name) kept on awaking and watching the Shiva-Ling. He found there was no activity of Shiva-Ling, it was just in an actionless posture. It was dead sure that it was lifeless. Mool Shankar came to this conclusion that it was not a real and living Shiva. It is a fallacy, a wrong notion, a blind concept. So damn this artificial Shiva! He was certainly illumined by projecting arguments and the lagic in his mind and he started to quest and question as to where the Real Shiva was! An idea of detachment overpowered his mind.

When his father Sh. Kishan saw Mool Shankar's tendency of detachment and renunciation, he wanted to get him enchained with marriage. But one, who is a searcher for the Truth, could be enchained so? On one night he left his house when he sensed his bondage. He met many hinderances but continued to pass over them to have an horizon of Knowledge. He met many scholars and saints and discussed many questions and secrets of yoga. He went to a renowned Sanyasi named Swami Poornanand Saraswati who gave him a name of Swami Dayanand Saraswati. Now he was Swami Dayanand Saraswati to be addressed. He studied the Vedic Literature which stands by the logical appreciation. He kept aside all that was intermixed. He was widely studied person. Some body suggested him to see and get guidance from a blind Sanyasi named Virjanand Swami, who was known as the bright and illumined 'Sun of Sanskrit Grammar', in Mathura city.

When Swami Dayanand a young sanyasi of sterdy body and logical brain knocked the door of Virjanand Swami, a voice came from inside with a question 'Who is there?' Swami Dayanand instantly replied, 'I have come to know sir this one as to who am I? In search of myself' I have come into your wisdom's light. The great Guru was astonished and sparkled and murmurred- 'Oh! welcome! I was really in search of such an appropriate pupil who could learn something important from me. So I am utterly pleased to have you, dear. What a fine, perfect and unparalled meeting between the Acharya and would be pupil it was!

Swami Dayanand started learning from Guru Deo Swami Virjanand Saraswati and enriched himself under his guidance. He was most dear to Acharya because of his unique calibre. He proved himself to be the truest and most failthful. He turned to the real path leading to the Real Shiva. He wrote many books and the Satyartha Prakash was one of them to declare its uniqueness with a commanding tone. Its every approach is everlasting and unbeaten. Nobody can challenge its contents. He in times of British yoke brought about the light and enthusiasm to show the path of independence to Indians and he produced many youngsters to fight the case of freedom. All the movements were imbibed with the essentials of his philosophy. Swedeshi Andolan is his product which lator on Gandhi Ji adopted. He taught us to be free without any bondage. Rana De was his first disciple.

He wrote many books in Hindi language as he declared at first that Dev Nagri (Hindi) will be the National language of Bharatvarsh.

He gave us all the perspectives of Vedic Religion and founded Arya Samaj, a body of logic and devotion. It was more helpful in achieving freedom. Having a national character there was a flood of establishing many Arya Samaj Mandirs almost in every town and city in the country and abroad. Through discussions held with other sects and matavalambis a norm of Vedic religion was set-up. They contain the glorious chapters of victories.

As a matter of fact, we have got this Maharshi Dayanand's vision which is regarded as the real heritage making a dialogue of our Vedic culture. He declared firmly 'Return to the Vedas'.

पृष्ठ 1 का शेष

राष्ट्रभृत यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार समारोह पूर्वक सम्पन्न

रही है जो कि उन्हें स्वच्छन्दता एवं लिव–इन–रिलेशनशिप की ओर ले जाता है। वस्तुस्थिति तो यह है कि चौथी शताब्दी में यूरोप में जन्में वैलेंटाइन पादरी ने तत्कालीन समाज में वैवाहिक जीवन के महत्त्व को समझकर प्रचारित करना शुरू किया और बहुत सारे युवक–युवतियों के विवाह कराये तो रोम के राजा जो स्वच्छन्दता एवं स्त्री–पुरुषों के अवैध सम्बन्धों को प्रश्रय देते थे उन्होंने वैलेंटाइन को फांसी पर लटका दिया था। यहाँ यह भी जानना आवश्यक है कि वैलेंटाइन को विवाह के सम्बन्ध में या स्त्री–पुरुष के पवित्र सम्बन्धों को वैवाहिक रूप देने की जानकारी भारत से यूरोप जाने वाले व्यापारियों द्वारा ले जाये गये, भारतीय साहित्य से प्राप्त हुई थी। वैलेंटाइन लिव–इन–रिलेशनशिप या स्वच्छन्दता के विरोधी थे, किन्तु कितनी बड़ी विडम्बना है कि आज के युवक तथा युवतियाँ वैलेंटाइन–डे को बड़े फूहड़ एवं स्वच्छन्द प्रेम के रूप में मनाते हैं और समाज की सभी मर्यादाओं, परम्पराओं एवं नैतिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ाते हैं। ऐसे समय में वैदिक परम्पराओं के प्रचार–प्रसार की महती आवश्यकता है और देश और दुनिया के सभी युवाओं को यह समझाने की आवश्यकता है कि वे जीवन को संस्कारित करके जियेंगे तो मनुष्य जीवन सार्थक होगा।

स्वामी आर्यवेश जी ने गायत्री मंत्र को बुद्धि की कामना का मन्त्र बताते हुए कहा कि जिनकी बुद्धि विकृत होती है वे ही दुःख झेलते हैं और गायत्री महामंत्र का बार–बार जप करने से विकृत बुद्धि भी सन्मार्ग को अपना लेती है। मनुष्य को अपने जीवन में गलत काम या पापाचार से बचना चाहिए और सदैव शुभ कर्म करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। गलत काम करते समय भय, लज्जा व शंका उत्पन्न होती है। जब कभी भी किसी कार्य को करने में यह तीनों भय, लज्जा व शंका की स्थिति बने तो वह कार्य नहीं करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर यज्ञोपवीत की व्याख्या करते हुए बताया कि यह यज्ञ से बांधने वाला संकलन है। पांच महायज्ञ जीवन में अन्तिम संस्कार तक करते रहने चाहिए। प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में ईश्वर की उपासना ब्रह्मयज्ञ है। अग्निहोत्र के माध्यम से प्रतिदिन देव यज्ञ, माता–पिता, दादा–दादी आदि की सेवा एवं सुश्रुशा करके पितृ यज्ञ करें उनकी आवश्यकताओं तथा भोजन, औषधि विस्तर आदि की उचित व्यवस्था करें इसके अतिरिक्त उनके पास बैठकर अच्छे विचार ग्रहण करने चाहिए इसे सुश्रुशा कहते हैं। इसी प्रकार जीव–जन्तुओं, पेड़–पौधों के प्रति करुणा एवं संवेदना बनाये रखने के लिए बलिवैश्व देव यज्ञ तथा श्रद्धा एवं ज्ञान अर्जित करने के लिए अतिथि यज्ञ करना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि यज्ञोपवीत ग्रहण करने से तात्पर्य यह है कि यह पांचों महायज्ञ अर्थात् कर्त्तव्यों को निरन्तर पालन करने की याद दिलाता है। स्वामी जी ने कहा कि समाज कें निर्माण के लिए सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करें। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए लिखा था। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि अनेक मत एवं सम्प्रदाय हैं, मगर उनमें मानव निर्माण के सम्बन्ध में कोई योजना नहीं है। महर्षि दयानन्द जी ने सोलह में से ग्यारह संस्कार बच्चे की आठ वर्ष की आयु तक करने का विधान किया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि छोटी आयु में ही बच्चों को सही संस्कार दिये जायें तो वे जीवनभर दिग्भ्रमित नहीं होंगे।

इस अवसर पर शहीदे आजम सरदार भगत सिंह के छोटे भाई सरदार कुलतार सिंह के सुयोग्य सुपुत्र श्री किरणजीत सिंह सिन्धु ने अपने ओजस्वी एवं सारगर्भित उद्‌बोधन में बताया कि महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से सरदार अर्जुन सिंह जी ने सारे परिवार को आर्य समाज एवं देशभक्ति से जोड़ा था। उन्होंने कहा कि सरदार भगत सिंह युवाओं के हृदय में आज भी विद्यमान हैं। आचार्य गुरुदत्त आर्य की प्रशस्ति करते हुए उन्होंने कहा कि अपनी अच्छी परम्पराओं का निर्वाह वे भली–भांति कर रहे हैं तथा अन्यों को प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने आर्य समाज की ध्वजा को अपने हाथों में जिस मजबूती से संभाल रखा है उससे हमारी नई पीढ़ियों को प्रेरणा लेनी चाहिए। सांसद डॉ. सत्यपाल जी ने अपने व्याख्यान में महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं पर अमल करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जाना जा सकता है और जीवन में परमात्मा को जानने से ही शांति मिलती है। हमारे पास निर्धारित समय है संस्कारों को ग्रहण कर अच्छा व्यक्ति बनने का प्रयास करें। समाज आज पतन के गर्त में इसलिए गिर रहा है कि हमने सद्‌ग्रन्थों का स्वाध्याय करना छोड़ दिया। उन्होंने कहा कि संसार को ठीक करने का मार्ग एक ही है और वह है ऋषि दयानन्द जी के बताये रास्ते पर चलना। जयपुर से पधारे स्वामी सच्चिदानन्द जी ने संस्कारों की व्याख्या करते हुए बताया कि गुणों में वृद्धि करना ही संस्कार होता है। लकड़ी की कोई कीमत नहीं होती लेकिन लकड़ी का संस्कार करने से उसकी कीमत बढ़ जाती है। आज हम देखते हैं कि छोटा सा मकान बनाने के लिए बहुत सी तैयारी की जाती है, परन्तु मनुष्य को मनुष्य बनाने का कोई प्रयास नहीं किया जा रहा। आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद (बिजनौर) की अधिष्ठात्री आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेद भारती ने कहा कि जिस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, वायु अपने नियम का पालन कर रहे हैं, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में नियमों का पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मनुष्य का सबसे पहला गुरु परमेश्वर ही है और जब मनुष्य को भय, लज्जा, शंका होती है तो समझ लीजिए कि अन्दर का गुरु अर्थात् ईश्वर बुरे कार्य करने से रोक रहा है। उन्होंने कहा कि बिना दीक्षा के शिक्षा का कोई अर्थ नहीं। शिक्षा और संस्कार से मनुष्य पशुत्व को छोड़कर मनुष्यता की ओर बढ़ता है। जब वह संस्कारों से संस्कृत हो जाता है तभी वह मनुष्य बनता है।

राष्ट्रभृत यज्ञ की पूर्णाहुति पद्मभूषण वीतराग स्वामी कल्याणदेव जी महाराज के परम शिष्य तथा शुकदेव आश्रम शुक्रताल के अधिष्ठाता स्वामी ओमानन्द जी ने सम्पन्न कराई। इस अवसर पर राज्यमंत्री श्री कपिलदेव अग्रवाल, पूर्व मंत्री श्री योगराज सिंह, शामली के समाजसेवी श्री प्रसन्न चौधरी, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य सरदार सुखदर्शन सिंह वेदी आदि ने भी विचार रखे। स्वामी चन्द्रदेव, स्वामी धर्मानन्द, स्वामी सत्यवेश, स्वामी मेधानन्द, स्वामी शान्तनु, आचार्य दयादेव व श्री भूलेराम आर्य ने अपने उपदेशामृत से श्रोताओं को उपकृत किया।

आयोजन के संयोजक आचार्य गुरुदत्त आर्य, श्री ओमदत्त आर्य एवं श्री यज्ञदत्त आर्य ने विद्वानों का सत्कार किया। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका बहन अंजलि आर्या ने समाज सुधार और देशभक्ति के प्रेरक भजन सुनाये। इस विशेष कार्यक्रम में सर्वश्री आनन्दपाल सिंह आर्य, आरती शर्मा, मंगत सिंह आर्य, मास्टर मनोचा खंडेलवाल, गजेन्द्र सिंह, डॉ. सतीश आर्य, योगाचार्य सुरेन्द्रपाल सिंह आर्य, योगेश्वर दयाल, डॉ. नीरज शास्त्री, जनेश्वर प्रसाद आर्य, मा. राजेन्द्र प्रसाद, रजनीश गुप्ता, आदित्य आर्य, मंजुल मनोहर, देवेन्द्र शर्मा, आदित्यदेव, मनोज जांगीड़ आर्य का कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने में विशेष सहयोग रहा।

इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन कुशल संयोजक श्री ओमदत्त आर्य ने किया। यह दो दिवसीय कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी-तपस्वी संन्यासी,
युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 84वें जन्मदिवस के अवसर पर

14वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक : 2 मार्च, 2021 (मंगलवार) से 14 मार्च, 2021 (रविवार) तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरि.)

स्वामी इन्द्रवेश

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

ब्रह्मा : स्वामी चन्द्रवेश जी,
आचार्य, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम),
ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरि.)

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली-110002

संकल्प

इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री-पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

मुख्य आकर्षण

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
महिला दिवस पर
विशेष कार्यक्रम
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
कार्यकर्ता
अभिनन्दन समारोह

fo'k"k % महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव-निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम)

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरि.)
सम्पर्क : 94166 30916, 93 54840454, 94664 30772, 01262-286900

युग दृष्टा, युग सृष्टा महर्षि दयानन्द जी को शत-शत नमन्

- महाशय पूर्ण सिंह आर्य

एक व्यक्ति के रूप में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत में फैली मिथ्या धारणाओं, पाखण्डों तथा सामाजिक कुरीतियों के विरोध में अनुपम संघर्ष किया। किसी भी प्रकार के भय से आतंकित नहीं हुए, कोई भी प्रलोभन उन्हें सत्य कथन एवं सत्याचरण से रोक नहीं पाया। किन्तु उन्होंने यह अनुभव किया कि बिना किसी संगठन के वह अपने सत्य संदेश को समग्र भारत अथवा विश्व में विस्तार से नहीं दोहरा पायेंगे। अतः उन्होंने चैत्र प्रतिपदा सम्वत् 1931 को मुम्बई नगर में एकसंस्था की स्थापना की जिसका नामकरण किया गया 'आर्य समाज'। आर्य समाज के प्रमुख दस नियम निर्धारित किए गए जो आर्य समाज के लक्ष्य भी हैं और उनकी प्राप्ति के उपाय भी। वे साधन भी हैं तथा साध्य भी। ये नियमोंपनियम ही अपने आप में क्रांति का बिगुल हैं।

कुछ व्यक्ति नियमोंपनियमों का अवलोकन करके ही पीछे हट जाते हैं। किन्तु आर्य समाज अपने जन्मकाल से ही इन्हीं लक्ष्यों को क्रियान्वित करने के लिए कार्यरत हैं।

आर्य समाज अपनी शक्ति सामर्थ्य और साधनों का उपयोग करते हुए आगे बढ़ रहा है वैचारिक क्रान्ति सारे संसार में लाने का प्रयास कर रहा है, प्रभु शक्ति देवे।

1. आर्य : महर्षि दयानन्द जी के उपदेश व संदेशानुसार सबसे पहले उद्घोषित किया कि हम सब भारतीय आर्य हैं, हिन्दु नाम तो विदेशी लोगों ने चिढ़के रूप में हमें दिया है हमारे सभी ग्रन्थों में हमारा या हमारे पूर्वज भी श्री राम, श्री कृष्ण आदि सभी आर्य हैं और इस देश का सबसे प्राचीन ऐतिहासिक नाम आर्यव्रत है, बाद में भारतवर्ष है।

2. वेदों की ओर लौटो : आर्य समाज का आधार और मुख्य कार्य वेद और वेदज्ञान का प्रचार व प्रसार है। वेद के आधार पर प्रभु का मुख्य नाम ओ३म् है। प्रभु निराकार सर्वव्यापक सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान है अपने सभी कार्य प्रभु अपने सामर्थ्य से ही करने में सफल है। वह कभी अवतार बन कर जन्म मरण के बन्धन और सीमाओं में नहीं बंधता।

भगवान की काल्पनिक (झूठी) मूर्ति बनाना और मोक्ष के लिए उसको पूजना प्रार्थना करना अवैदिक है, अज्ञान है क्योंकि मूर्ति तो जड़ पदार्थों से बनी है जो न तो सुन सकती है, न चल सकती है। देखना और बातें करना तो दूर। इसका प्रभाव है कि अब मूर्ति पूजक पौराणिक भी वह आस्था व श्रद्धा नहीं रखते हैं औपचारिकता पूरी करते हैं।

3. यज्ञ : आर्य समाज मानव मात्र ही नहीं, प्राणी मात्र की भलाई के लिए पवित्र वेद की ऋचाओं (मन्त्रों) द्वारा, शुद्ध सामग्री, घी व सामग्री के द्वारा प्राण के आधार वायु को शुद्ध करता है इसलिए 'यज्ञेवै श्रेष्ठतम कर्म' अयम या भवन्सयमाभि वेद का आदर्श है ''आयुर्यज्ञेन कल्पताम'' जिससे संसार मेंफैले हुए प्रदूषण को घटाया जा सकता है। सर्वेभवन्तु सुखिना आर्य समाज का ध्येय है।

4. शिक्षा : सभी प्रकार के धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों के सम्पादन के लिए सद्ज्ञान आवश्यक है। अतः आर्य समाज ने सभी के लिए शिक्षा हेतु रात्रि पाठशालाएं, स्कूल, गुरुकुल व कालेज तथा विश्वविद्यालय तक का संचालन किया है।

5. महिला जागरणः स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है, क्योंकि पौराणिक जगत में आज भी स्त्रीशूद्रोनाधीयताम अर्थात् शूद्रों व स्त्रियों को वेद ज्ञान और साधारण ज्ञान भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं, वहीं आर्य समाज की मान्यता है कि जिस प्रकार प्रभु की दी गई सभी वस्तुएं सूर्य, हवा, पानी, अन्न, फल, फूल आदि सभी के लिए है इसी प्रकार प्रभु का वेद ज्ञान भी सभी के लिए है।

6. जन्मगत जातिवाद का विरोधी : आर्य समाज जन्म के आधार पर जाति-पांति को नहीं मानता और शायद संसार में सब से पहली संस्था आर्य समाज ही है, जो कि जन्म को जात का आधार नहीं मानती, बल्कि गुण, कर्म व स्वभाव को जाति का, वर्ग का आधार मानती है क्योंकि वेद में कहा है- जन्मनाजायते शूद्रो' जन्म से सभी शूद्र हैं, अज्ञानी हैं, मूर्ख हैं, एक डॉक्टर व इंजीनियर का लड़का अध्यापक व डॉक्टर बिना पढ़े नहीं बन सकता इसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदिकेवल जन्म से नहीं अपितु तदानुसार, शिक्षा दीक्षा, गुण व कर्म करने पर ही ब्राह्मण आदि वर्ग में आ सकते हैं।

7. छूआछूत विरोध : जिस समय आर्य समाज का संगठन बना तब वेद की सच्ची शिक्षा न होने के कारण और धर्म के नाम पर भ्रम व पाखण्ड फैलाने के कारण छूआछूत की भयंकर बीमारी फैली हुई थी। इसका विरोध आर्य समाज और महत्मा गांधी जी व कांग्रेस ने बड़े ही वेग से किया। इस छूआछूत की बीमारी ने देश की बड़ी हानि की है। अतः इसका उन्मूलन होना चाहिए।

8. राष्ट्रप्रेम तथा स्वाधीनता का सन्देश : आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम राष्ट्रप्रेम व स्वाधीनता का संदेश दिया। जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी महान है, का संदेश देने वाला आर्य समाज ही है।

9. कुरीतियों का निवारण : देश में फैली सैकड़ों कुरीतियों जैसे बाल विवाह, स्त्री पुनर्विवाह का न होना, छुआछूत, अन्धविश्वास भूत प्रेत आदि अनेक बुराइयोंका आर्य समाज ने निराकरण किया है और अब भी कर रहा है।

10. वर्तमान संघर्ष : अतीत में आर्य समाज ने काफी समाज सुधार के कार्य कर जन-साधारण को बचाया है अब इस वैज्ञानिक प्रचार व प्रसार के युग में आर्य समाज को एक बार फिर संगठित होकर रोज नए-नए पैदा होने वाले भगवानों (गुरुवरों), दूरदर्शन और सरकार द्वारा लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाले व भ्रमित करने ओ३म् नमः शिवाय, महाभारत आदि के द्वारा आर्य के नाम पर भ्रम और नंगे तथा गन्दे नाचों द्वारा भारतीय सभ्यता व संस्कृति को विकृत करने वाले कदमों का घोर विरोध करके अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। आर्य समाज एक संस्था ही नहीं अपितु एक वैचारिक क्रान्ति है, आन्दोलन है। इसको अपनी पूरी शक्ति लगाकर आगे बढ़ाए, यही इच्छा व प्रार्थना है।

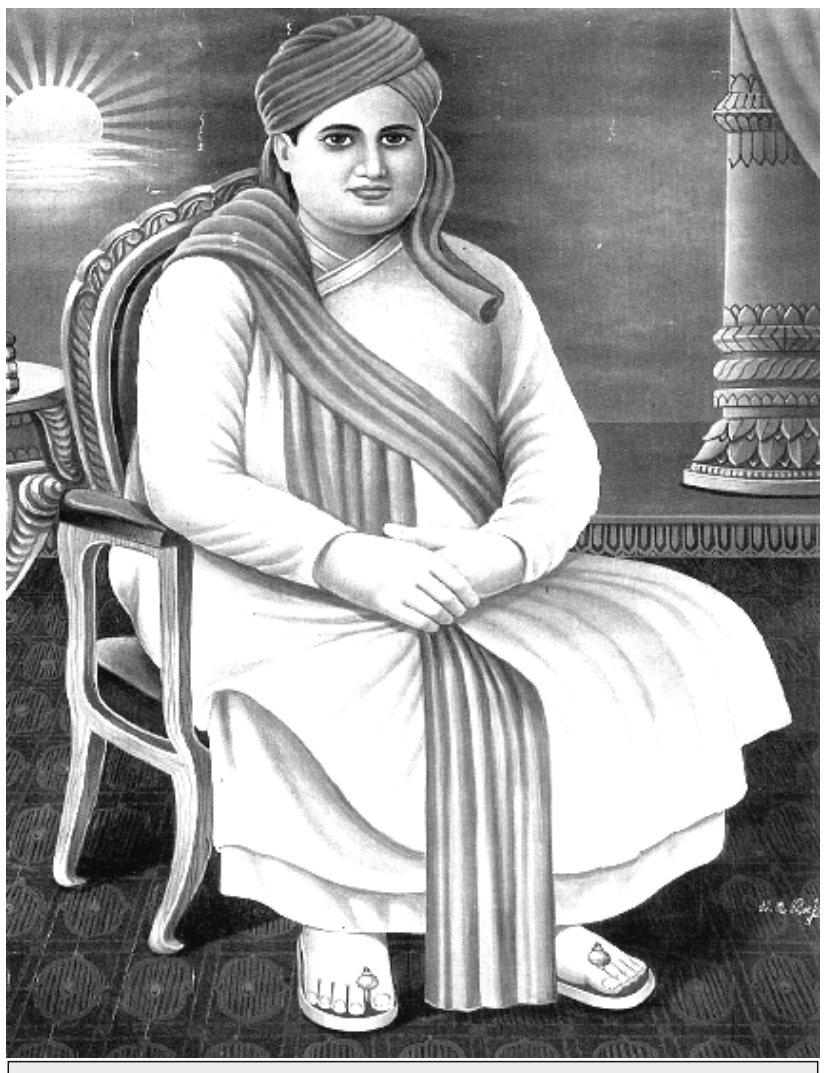

जन्म दिवस पर शत बन्दन

- राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

उद्धारक हे दिव्य वेद के, मानवता के प्रखर प्रचारक।
आर्ष-मनीषी परम्परा के, प्रतिपादक तुम्! हे उन्नायक।
भरा धरित्री के कण-कण में तुमने वेदों का स्पन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

घोर तमाच्छादित थी वसुधा, विस्तृत था अज्ञान अंधेरा।
असुर वृत्तियों ने निर्भय हो डाला था जन मन पर डेरा।
बन प्रतिमूर्ति शौर्य-साहस की- किया विनष्ट धरणि क्रन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

बन्धन में जकड़ा था पावन, ऋषियों का यह देश महान।
सत्य सनातन शुचितर संस्कृति सहती थी अतुलित अपमान।
तरुणायी को अंगड़ायी दे- सहस जगाया जन अभिमन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

ललकारों से ऋषिवर तेरी, निकल पड़ी थी युवक टोलियाँ।
भयाक्रान्त हो गए विदेशी- शासक, सुनकर सिंह बोलियाँ।
स्वाभिमान व शौर्यशक्ति से - हुआ सुगर्वित भू कन-कन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

जाति-पांति का छुआ छूत का, भगा यहाँ से सारा भूत।
समता समरसता सहिष्णुता - से हो गए सभी अभिभूत।
हर्षोल्लास भरा अन्तर में - ज्योतिर्मय हो गया गगन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, जगी नवल जागृति की क्रान्ति।
जल-थल में व नील गगन में, उत्प्रेरित कर दी उत्क्रान्ति।
महर्षि दयानन्द! तुमने ही - किया सत्यशिव अभिनन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

- मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

शाकाहार के पक्ष एवं मद्यपान के विरोध में वैज्ञानिक तथ्य

– श्री रामनिवास लखोटिया

आज भारतीय समाज में सामिष भोजन की बढ़ती हुई प्रवृत्ति एक शोध और गंभीर चिन्ता का विषय है। साथ ही साथ शराब, धूम्रपान, अफीम, गाँजा, गुटखा और विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों के सेवन की बढ़ती प्रवृत्ति भी समाज के सभी तबकों के लोगों में दृष्टिगोचर हो रही है, और चिन्तित कर रही है। शहरों में पश्चिमी फैशन से प्रभावित परिवारों के युवक एवं युवतियों और उभरते हुए बालकों में भी जहाँ एक ओर नशे की प्रवृत्ति बढ़ रही है, वहीं अंडा या चिकन सूप या अन्य सामिष भोजन का होटलों या रेस्टोरेंटों में ऐसे शाकाहारी परिवारों के सदस्य सेवन कर रहे हैं, जिनके घरों में प्याज और लहसुन भी नहीं आता था। इसलिए शाकाहार के पक्ष में व मदिरापान के विरोध में वैज्ञानिक तथ्यों सहित विवेचन इस लेख में करने का प्रयास किया गया है।

शाकाहार उत्तम आहार :–

यह एक विडंबना ही है कि जहाँ विदेशों में नैतिकता या स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण जगह–जगह लोग मांसाहार से शाकाहार की ओर आ रहे हैं, वहीं फैशन के कारण कहिये या अज्ञान के कारण, युवकों में और विशेषकर कालेज में पढ़ने वाले व्यक्तियों में मांसाहार की प्रवृत्ति बहुत तेजी के साथ बढ़ रही है। जहाँ एक ओर यह अध्यात्म और धर्म के विरुद्ध आचरण है, वहीं सामिष भोजन अर्थात् मांसाहार नैतिकता की दृष्टि से एकदम गलत है। महाभारत में स्पष्ट लिखा गया है कि जो व्यक्ति मांसाहार करता है, बेचता है, खरीदता है, या उसके क्रय विक्रय में सहायक होता है वह भी मांसाहारी है।

फिर 'जियो और जीने दो' के नैसर्गिक, नैतिक सिद्धान्त के अनुसार जब किसी जीव को हम जीवन दे नहीं सकते तो हमें अपने स्वाद या स्वार्थ के लिए उसके प्राण लेने का कोई अधिकार नहीं है। इस नैतिक सिद्धान्त के कारण ही पाश्चात्य देशों के महान मानव जैसे, सुकरात, अरस्तु, प्लेटो, रूसो, शैक्सपियर, हुरविन, न्यूटन, लियो, आइंस्टीन, टाल्सटॉय, जार्ज बनोर्ड शा, चर्चिल आदि पूर्णतः शाकाहारी बन गए।

अण्डा भी स्वास्थ्यवर्धक नहीं :–

आजकल प्रायः यह सुनने में आ रहा है कि बच्चों को अण्डे आदि के सेवन से अधिक स्वस्थ बनाया जा सकता है। यह एक भ्रांति है, जिसका निराकरण 1985 के नोबल पुरस्कार विजेता डॉ0 माइकल एस० ब्राऊन तथा डॉ० जोसेफ एल0 गोल्डस्टीन नामक दो अमेरिकन डॉक्टरों ने किया जब उन्होंने यह साबित कर दिया कि हृदय के रोग के कारण ही अधिकांश मौतें होती हैं। उनके अनुसार कॉलस्टेरोल नामक तत्व को रक्त में जमने से रोकना बहुत ही आवश्यक है और, कॉलस्टेरोल अंडों में सबसे अधिक मात्रा में अर्थात् 100 ग्राम अण्डे में लगभग 500 मि0ग्रा0 पाया जाता है। यह वनस्पतियों एवं फलों में नहीं के बराबर होता है। परन्तु मांस, अंडों और जानवरों से प्राप्त वसा में प्रचुर मात्रा में होता है।

अब यह भी सिद्ध हो गया है कि अंडा सुपाच्य नहीं है। बल्कि अंडे के छिलके पर लगभग 15,000 सूक्ष्म छिद्रों के द्वारा कई जीवाणु अंडे में प्रवेश कर जाते हैं जो अंडे को खराब कर देते हैं। इससे हृदय रोग शुरू हो जाता है। इससे गुर्दे के रोग एवं पथरी जैसी बीमारियों को बढ़ावा मिलता है। यही कारण है कि 'इंटरनेशनल वेजिटेरियन यूनियन' एवं शाकाहारी संस्थाओं के द्वारा शाकाहार को विदेशों में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है।

शाकाहार पौष्टिक एवं स्वास्थ्य प्रदायक आहार है :– प्रोटीन, कैलोरी और कार्बोहाइड्रेट आदि की दृष्टि से स्वास्थ्य के लिए शाकाहार पौष्टिक आहार है। जैसे, प्रति 100 ग्राम खाद्य में दालों में 24 प्रतिशत प्रोटीन व सोयाबीन में 43 प्रतिशत प्रोटीन होता है, वहाँ अंडे में कुछ 13 प्रतिशत व अन्य माँस व मछली में 18 से 22 प्रतिशत तक प्रोटीन होता है। विशुद्ध शाकाहारी जानवर मांसाहारी जानवरों की तुलना में अधिक शाक्तिशाली हैं, जैसे–घोड़ा, गेण्डा व हाथी। मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार विभिन्न रोगों की रोकथाम में अधिक सहायक सिद्ध हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संघ ने ऐसी 160 बीमारियों के नाम अपने समाचार पत्र में घोषित किए हैं जो मांसाहार से फैलती हैं। इन बीमारियों में मिर्गी की बीमारी प्रमुख है। मानव पर सैंकड़ों प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि पशुओं वाली चिकनाई से रक्त में 'कॉलेस्ट्रॉल' की मात्रा बढ़ जाती है

और वनस्पति की चिकनाई उसे कम करती है। इस बात के लिये प्रचुर प्रमाण यह है कि 'आर्टिरियोस्कलेरोसिस' तथा 'कोरोनरी' हृदय रोगों में कोलेस्ट्रॉल बड़ा कारण है। लॉस एंजिल्स (अमेरिका) के डॉ0 मारिसन का कथन है कि कोलेस्ट्रॉल से अन्य कितने ही मानव रोग उत्पन्न होते हैं, यथा–पथरी। शरीर विज्ञान से सम्बन्धित प्रयोगशाला के डॉक्टर मेर ने यह प्रदर्शित किया है कि मांसाहार से हृदय का क्रियाकलाप अत्यधिक बढ़ जाता है।

इसी प्रकार रक्तचाप, आर्टरी की कठोरता और गुर्दे के रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए भी मांसाहार हानिकारक है। स्वास्थ्य के प्रेमियों के लिए अपने स्वयं के स्वास्थ्य हेतु यह आवश्यक है कि वे अंडे और अन्य मांसाहारी पदार्थो का सेवन कतई न करें।

मदिरापान से हानियाँ :–

नशा चाहे जैसा हो, वह स्वास्थ्य के लिए घातक है। विशेषकर मदिरापान की प्रवृत्ति और भी घातक है क्योंकि यह स्वभावतः मांसाहार और विषय विकार के प्रति मनुष्य को आकृष्ट करता है। कई बार कुछ व्यक्ति यह प्रश्न कहते हैं कि आखिर शराब के नशे को बढ़ते हुए रोग के रूप में और एक खराब आदत के रूप में क्यों गिना जाता है? इस सम्बन्ध में कुछ विद्वानों और धर्म ग्रन्थों के उद्‌गार मनन करने योग्य हैं। महान चिन्तक ग्लेडस्टोन के अनुसार युद्ध, अकाल और महामारी ने मिलकर मानव–जाति का इतना अहित नहीं किया, जितना अकेली शराब ने किया है। शराब के नशे की आदत से उत्पन्न आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक दुष्प्रभावों का दायरा अत्यन्त व्यापक है।

शराब पीने के कुछ ही देर बाद उसमें मौजूद अल्कोहल रक्त में शामिल होकर रक्त कोशिकाओं के माध्यम से सारे शरीर में फैल जाता है। अल्कोहल से हमारा तात्पर्य इथाइल एल्कोहल से है। परन्तु बहुधा मिलावटी शराब में अत्यधिक विषाक्त मिथाइल एल्कोहल भी पाया जाता है। भिन्न–भिन्न प्रकार की शराब में भिन्न–भिन्न मात्रा में एल्कोहल भी पाया जाता है। जैसे देशी शराब में 35 से 50 प्रतिशत, बियर में 4 से 8 प्रतिशत या 10 प्रतिशत, स्प्रिट में 40 से 50 प्रतिशत, वाइन में 8 से 15 प्रतिशत यह पाया जाता है। केन्द्रीय स्नायु तंत्र शराब के प्रभाव से कुन्द (डिप्रेस्ड) हो जाता है। स्नायु तंत्र के उच्च केन्द्रों पर रोक लगने पर मनुष्य कुछ समय के लिए खुशहाली का अनुभव करता है जिससे वह आसानी से क्रोधित हो जाता है, बेवजह हंसता है, तथा बातें करता है और उसका व्यवहार असामाजिक हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह कोई भी अपराध कर सकता है।

विटामिन 'बी' समूहों की कमी, आंखों पर दुष्प्रभाव, हृदय गति का तीव्र होना, गैस्ट्राइटिस और अल्सर आदि का बनना, यकृत की खराबी होकर असाध्य बीमारी (सिर्होसिस ऑफ लीवर) होने की संभावना बढ़ना आदि शराब के नशे के दुष्परिणाम हैं। शराब के नशे करने वाले व्यक्ति प्रायः अपच, अनिद्रा, पौरूषहीनता आदि गम्भीर रोगों के शिकार हो जाते हैं। धर्म शास्त्रों में इसका निषेध किया गया है। निरुक्त के अनुसार सात महा पापों में शराब पीना भी सम्मिलित है (निरुक्त 6ध्27)। छान्दोग्य उपनिषद् में यह स्पष्ट कहा गया है कि 'शराब सभी पापों का कारण है'। चरक संहिता में लिखा है– 'शराब सभी कुकर्म कराने वाला और देह का नाश करने वाला है। शराब पीने वालों के लिए कोई भी औषधी असर नहीं करती है।'

मदिरापान मांसाहार है :–

विगन सोसाइटी के एक 'पोर्टल' में स्पष्ट किया गया है कि अधिकांश शराबों में खून, हड्डी, चर्बी और कई प्रकार के जानवरों और कीड़ों के हिस्सों का मिश्रण होता है। कुछ किस्मों की शराब में मछली का तेल और जिलेटिन और इंजिंगिलास मिलाये जाते हैं। इंजिंगिलास एक प्रकार का वह जिलेटिन पदार्थ है जो स्वच्छ पानी की मछलियों और विशेषकर स्टरजन मछलियों के ब्लेडर से निकाल कर प्राप्त किया जाता है। इसी प्रकार, जानवरों की कोशिकाओं और चमड़ी और उनके अन्य शरीर के हिस्सों को उबाल कर एक जेली का निर्माण होता है जिसे 'जिलेटिन' कहते हैं। जब ये पदार्थ अधिकांश शराबों में मिलाये जाते हैं तो शराब मांसाहार ही हो जाती है।

समाज के व्यक्तियों का यह कर्त्तव्य है कि वे स्वयं भी शराब के नशे से बचें एवं धूम्रपान, गुटखे आदि के नशे से होने वाले दुष्परिणामों से अपनी नई पीढ़ी को समझायें। दृढ़ संकल्प से ही हम इनसे बच सकते हैं।

– अध्यक्ष भारतीय शाकाहार परिषद्

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सब यज्ञों का महान् तत्त्व विश्वतोधार होना

**स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआ द्या´ रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधारँ् सुविद्वा´सो वितेनिरे।।**
—यजु० १७/६८, अथर्व० ४/१४/४

ऋषिः—Hk'x%AA देवता—vkT;e%AA छन्दः—vu"ViAA

विनय—हमारे सब यज्ञ 'विश्वतोधार' होने चाहिएँ, पर प्रायः हमारे यज्ञ एकतोधार होते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम दूर तक देखकर, सब संसार को दृष्टि में रखकर लोकोपकार नहीं करते, अतः हमारे ये यज्ञकार्य परिमित, अदूरगामी और एकपक्षीय होते हैं। हम केवल अपने समाज, अपने कुटुम्ब, केवल एक संस्था या केवल अपने देश व राष्ट्र के हित के लिए अपने उपकार–कार्य करते हैं और उनके लिए बड़े–बड़े स्वार्थ–त्याग तक करते हैं,पर यह ध्यान नहीं रखते कि वह संस्थाहित, देशहित, वह राष्ट्रहित संसार के हित के भी अविरुद्ध होना चाहिए। विश्वतोधार यज्ञ वह है जो 'सर्वभूतहित' के लिए होता है, जो सम्पूर्ण विश्व के भले के लिए, प्राणिमात्र के हित की दृष्टि से होता है, अथवा यूँ कहें कि जो परमात्मा की प्रीत्यर्थ होता है। वही यज्ञ पूरी तरह फैला, वितत होता है, व्यापक होता है। वही यज्ञ 'विष्णु' कहाता है। पर यज्ञ के इस 'विष्णु', 'विश्वतोधार' रूप को संसार में कुछ उत्तम ज्ञानी ही समझते हैं और ये विरले ही उसे वितत करते हैं, अतः ये 'सुविद्वान्' तो शीघ्र ही पृथिवी और अन्तरिक्ष के स्थूल और मानसिक लोकों को लाँघकर आत्मा के सुखमय और प्रकाशमय लोक में चढ़ जाते हैं, आसानी से पहुँच जाते हैं। वे उस आत्मिक सुख की ओर जाते हुए, उसका आनन्द लेते हुए दुनिया की किसी भी अन्य वस्तु की परवाह नहीं करते। 'विश्वतोधार' यज्ञ करने वालों को 'स्वः' का एक ऐसा दृढ़ अवलम्बन मिल जाता है कि वे फिर संसार के अन्य किसी भी सहारे की तनिक भी अपेक्षा नहीं करते। चाहे उनके साथी उनसे छिन जाएँ, उनका प्रभुत्व नष्ट हो जाए, उनकी सब प्रतिष्ठा जाती रहे, पर वे इन सहारों के रखने के लिए भी कभी अपने यज्ञ को थोड़ी देर के लिए भी छोटा, अव्यापक नहीं करते। वे अपनी दृष्टि को कभी नीची या संकुचित नहीं करते। ऊपर चढ़ते हुए नीचे की क्षुद्र चीज़ों पर कभी उनकी दृष्टि ही नहीं पड़ती। यही रहस्य है जिससे वे ऊपर–ऊपर ही जाते हैं और शीघ्र सुखमय–प्रकाशमय द्युलोक में जा पहुँचते हैं।

शब्दार्थ—ये=जो **सुविद्वांसः**=उत्तम ज्ञानी महापुरुष **विश्वतोधारं यज्ञम्**=विश्वतोधार यज्ञ को, सबको सब ओर से धारण करने वाले यज्ञ को **वितेनिरे**=विस्तृत करते हैं वे **स्वः यन्तः**=आनन्दमय स्थिति को जाते हुए **न अपेक्षन्त**=किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा नहीं करते या नीचे नहीं देखते, **रोदसी**=वे द्यावापृथिवी को लाँघकर **द्याम्**=द्युलोक में **आरोहन्ति**=चढ़ जाते हैं।

**साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार**

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।